Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR 2023, VOL- 10/76

किशोरों के शैक्षिक समायोजन में गृह-वातावरण की भूमिका

राज कमल[1] & मोनव्वर जहां[2], Ph.D.

[1] पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना.

[2] प्राचार्या, वीमेंस ट्रेनिंग कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना

Paper Received On: 21 APRIL 2023

Peer Reviewed On: 30 APRIL 2023

Published On: 01 MAY 2023

Abstract

किशोर के सर्वांगीन विकास के लिए संतुलित और स्वस्थ गृह-वातावरण उपलब्ध कराना अति आवश्यक है जो उनकी क्षमताओं के निरंतर विकास में सहायक हो। किशोर के सर्वांगीन विकास में गृह वातावरण और उसके साथ समायोजन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। गृह वातावरण में ही बालक समायोजन हेतु वांछित कौशलों में प्रवीण बनने हेतु अनौपचारिक तरीकों को सीखता है। किशोरावस्था में अनेक महत्वपूर्ण मानसिक तथा शारीरिक परिवर्तन होते है। इस अवस्था में बालकों को किसी भी समस्या के लिए पारिवारिक मूल्य, बंधन, स्नेह, विश्वास और अभिभावकों के संपर्क की जरुरत पड़ती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियां आती है जब वह अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। यदि वह आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है तो वह अपने वातावरण से समायोजित हो जाता है। अच्छें पारिवारिक वातावरण का प्रभाव किशोरों पर भी अच्छा ही पड़ता है और वे घर, पड़ोस तथा विद्यालय में अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से निभाते है। घर के अच्छे वातावरण का बच्चे के संवेगात्मक, ज्ञानात्मक तथा सामाजिक व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे संतुलित और सकारात्मक दृष्टिकोण के प्रभाव से ही बालक के अन्दर मूल्यों और आदर्शों का विकास होता है तथा बालक में उत्तम नागरिकता के गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का निर्माण करने में सहायक होता है। परंतु गृह वातावरण में कई ऐसे कारक है जो शैक्षिक समायोजन की प्रक्रिया को प्रभावित करते है| गृह वातावरण के

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विभिन्न कारकों और शैक्षिक समायोजन उनकी भूमिका का अध्ययन प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

मुख्य शब्द: गृह-वातावरण, समायोजन, शैक्षिक समायोजन

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

किशोरावस्था मानव जीवन की विकास की तीसरी अवस्था है जिसे तूफान, तनाव एवं संघर्ष की अवस्था कहा जाता है। किशोरावस्था अंग्रेजी भाषा के 'Adolescence' का पर्याय है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है जिसका अर्थ है 'परिपक्वता की ओर बढ़ना'। यह अवस्था 12 से 18 वर्ष के बीच होती है, जो विकास एवं वृद्धि की विभिन्न अवस्थाओं से अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह अवस्था जीवन का बसंत काल मानी जाती है जिसमें बालक न तो बच्चा और न ही प्रौढ़ होता है।

शिक्षा द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास अर्थात शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है। चूँकि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। अत: शिक्षा प्राप्त करने के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करना अति आवश्यक है जो किशोरों के शारीरिक क्षमता, मानसिक क्षमता तथा नैतिक क्षमता के निरंतर विकास में सहायक सिद्ध हो। किशोरों के सर्वांगीण विकास में गृह वातावरण तथा वहाँ उपलब्ध संसाधनों की भूमिका महत्वपूर्ण होता है। शिक्षा ग्रहण करने की प्रथम पाठशाला परिवार ही है, जहाँ विद्यार्थी समायोजन की प्रक्रिया को सीखता है। कहा जा सकता है कि अच्छे से समायोजित बालक भविष्य में सफल होता है, साथ ही वह स्वतंत्र विचार एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है। किशोर का गृह वह पवित्र पाठशाला है जिसमें माता-पिता एवं परिवार के वातावरण में उपस्थित ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त होता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता एवं उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेवार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान एवं कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा ने हमेशा से ही एक व्यक्ति में बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण किया है। साथ ही शिक्षा, समाज की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ज्ञान हस्तांतरण का प्रयास है। इसलिए शिक्षा व्यक्ति को समाज से जोड़ने के साथ-ही-साथ समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। किशोर शिक्षा द्वारा ही सामाजिक प्रतिमानों और मूल्यों को सीखता है।

किशोर के लिए घर एक ऐसा स्थान है जहाँ वह माता-पिता तथा परिवार के साथ भविष्य में समायोजन हेतु वांछित कौशलों में प्रवीण बनने हेतु अनौपचारिक तरीकों को सीखता है। गृह वातावरण विद्यार्थियों को जीवन के वास्तविक अनुभव प्रदान करते हुए उनमें ज्ञान का उचित उपयोग, अंतर्निहित क्षमताओं का विकास करता है तथा शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि, नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने के साथ-साथ उचित समायोजन स्थापित करने के लिए अभिप्रेरित करता है। प्रत्येक किशोर का पालन-पोषण एवं विकास निर्धारित वातावरण में होता है, उचित वातावरण न मिलने पर अनेक प्रतिभाएँ विकसित नहीं हो पाती है। अत: किशोर को जैसा उचित वातावरण मिलता है वह उसी वातावरण को आसानी से ग्रहण करने की चेष्टा करता है। विद्यालय परिसर में किशोर विभिन्न आदतों, रुचियों, योग्यताओं एवं दृष्टिकोण के संपर्क में आता है, जिससे उनमें कुछ शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होते है। इन परिवर्तनों में गृह वातावरण का प्रमुख योगदान होता है।

माता-पिता अपने बच्चें के आरंभिक विकास के स्तरों को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा का पहला अनुभव, बच्चा अपने घर से सीखता है। एक बच्चें के जीवन में उसका पहला विद्यालय अर्थात प्रथम पाठशाला परिवार ही होता है। माता-पिता बच्चे के भविष्य को एक आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

किशोर और संतुलित वातावरण

किशोरावस्था वह अवधि होती है जब व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से अनेक परिवर्तनों से गुजरता है। ऐसे अनेक हार्मोन संबंधी परिवर्तन होते हैं जो

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यक्ति को यौन परिपक्वता के लिए तैयार करने हेतु शरीर में होते है। किशोरावस्था में अनेक महत्वपूर्ण मानसिक तथा शारीरिक परिवर्तन होते है। इस अवस्था में बालकों को किसी भी समस्या के लिए पारिवारिक मूल्य, बंधन, स्नेह, विश्वास और अभिभावकों के प्रति पहुंच (संपर्क) की जरुरत पड़ती है। किशोरावस्था में व्यक्तित्व के निर्माण तथा व्यवहार के निर्धारण में वातावरण का बहुत हाथ होता है; अत: अपने उचित या अनुचित व्यवहार के लिए किशोर बालक स्वयं नहीं वरन उसका वातावरण उत्तरदायी होता है। संतुलित वातावरण के लिए प्रयास करना किशोर बालकों के अभिभावकों का महत्वपूर्ण कार्य है जिससे किशोर में समर्थन और संवेगात्मक सुरक्षा के साथ-साथ नए व्यवहारों का परीक्षण करने की भावना विकसित होती है। इस अवस्था में एक महत्वपूर्ण कौशल लचीलापन है क्योंकि अभिभावक को अपने बालकों को स्वतंत्र और सृजनशील बनने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

संतुलित वातावरण और समायोजन

समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है, क्योंकि इससे व्यक्ति का जीवन प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति समायोजित है तो उसका व्यक्तित्व पूर्ण होगा और वह सुखी जीवन व्यतीत करेगा क्योंकि व्यक्ति को अपने परिवार से, विद्यालय से, समाज से, अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समायोजन करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियां आती है जब वह अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। यदि वह आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है तो वह अपने वातावरण से समायोजित हो जाता है। वातावरण सम्बन्धी कारकों, जैसे- भौगोलिक, पारिवारिक व विद्यालयी का प्रभाव भी समायोजन पर पड़ता है। वातावरण ऐसा होना चाहिए जिसमें रहकर किशोर अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर सके। ऐसा न होने पर किशोर कुसमायोजित हो जाता है और सदा अप्रसन्न और असन्तोषी रहता हैं। किशोर की इन आवश्यकताओं की पूर्ति इस रूप में होनी चाहिए कि दूसरे व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधा न

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पड़े। यदि बालक की शैक्षणिक योग्यता अच्छी है तो निश्चित ही उच्च बुद्धि वाला होगा किन्तु वातावरण तथा शिक्षा द्वारा मन्द बुद्धि बालक में भी निखार तथा चमक लायी जा सकती है।

गृह वातावरण एवं समायोजन

समायोजन की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया होती है। इसका विकास बालकों में धीरे-धीरे होता है। फिर भी यदि इसमें कुछ बातों का विशेष ध्यान दिया जाये तो बालकों में समायोजन की भावना का विकास काफी आसान हो जाता है। सर्वप्रथम बालकों के समायोजन में परिवार की भूमिका होती है। इसके पश्चात् विद्यालय तथा वहां का वातावरण बालकों के कुशल समायोजन के लिए उत्तरदायी होता है। यदि बच्चा अपने घर में अधिक समय बिता रहे हैं, तो उनके माता-पिता को उन्हें एक स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कारण चाहिए क्योंकि अस्वस्थ वातावरण बच्चे के विकास में रुकावट डाल सकता है। इसलिए, माता-पिता को अपने को शिक्षा का अभ्यास कराने के लिए, घर को एक बेहतर स्थान बनाना चाहिए। यदि बालक सुयोग्य और चरित्रवान है तो हम कहते हैं कि वह बालक अच्छे पारिवारिक वातावरण में पला बढ़ा है। यदि परिवार के सभी लोग आपस में अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से निभाते हैं तथा परिवार के लोगों की मदद करते है तो वह एक समृद्धशाली परिवार बनता है तथा समाज में अपनी जगह बनाता है। अच्छें पारिवारिक वातावरण का प्रभाव उनके बच्चों पर भी अच्छा ही पड़ता है और वे घर, पड़ोस तथा विद्यालय में अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से निभाते है। इसलिए हमें घर व विद्यालय के वातावरण के साथ-साथ आस-पड़ोस का वातावरण भी स्वस्थ बनाना पड़ेगा, क्योंकि बच्चें के व्यक्तित्व विकास में आस-पड़ोस के वातावरण का योगदान होता है और सभी मिलकर ही मानव पारिस्थितिकी का निर्माण करते है। यदि घर का वातावरण श्रेष्ठ है तो निश्चित ही व्यक्ति श्रेष्ठ बुद्धिवाला कहलायेगा। यदि एक कम बुद्धि के बालक का यदि अच्छे वातावरण में विकास हुआ है तो वह अच्छा नेता तथा महान व्यक्ति बन सकता है। उसी प्रकार यदि बृद्धिमान तथा जन्म से उत्तम योग्यता रखने वाले बालक को अच्छे वातावरण में न रखा गया तो वह योग्य कुशल इंजीनियर कुशल

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

डॉक्टर वगैरह कदापि नहीं बन सकता और परिवार तथा समाज के लिए उपयोगी नहीं बन सकता है।

गृह-परिवेश में समायोजन की स्थिति

गुप्ता और रानी (2015) ने शोध अध्ययन उपरांत पाया कि घर के वातावरण तथा आस-पड़ोस के वातावरण छात्र के व्यक्तित्व को बढ़ाने में मदद करता है। उन्होंने बताया कि घर के अच्छे वातावरण का बच्चे के संवेगात्मक, ज्ञानात्मक तथा सामाजिक व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है तथा अच्छे वातावरण का ही नतीजा है कि बच्चे के परिवार के सभी लोग आपस में प्रेम-पूर्वक रहते हैं तथा बच्चों की परवरिश ठीक से करते है तथा परिवार के एक-दूसरे सदस्यों के साथ भी सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं इस सकारात्मक दृष्टिकोण के प्रभाव से ही बालक के अन्दर मूल्यों और आदर्शों का विकास होता है तथा बालक में उत्तम नागरिकता के गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का निर्माण करने में सहायक होता है। परंतु आज हमारे देश में परिवारों की दशा में भारी परिवर्तन हो रहा है और यह परिवर्तन का ही नतीजा है कि भारतीय परिवारों में गुणों की कमी होती जा रही है। पारिवारिक सम्बन्ध टूटते जा रहे हैं। परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और सहानुभूति नाम की चीज ही नहीं रही जो कि एक परिवार में होनी चाहिए। इनका कारण हम पश्चिमीकरण, औधोगिकरण तथा आर्थिक दबाव कह सकते है, क्योंकि आज हमारी आवश्यकताओं का बढ़ जाना तथा विदेशों की देखा-देखी ऐशो-आराम तथा विलासता की जिन्दगी के कारण खर्चें बहुत अधिक बढ़ गए हैं जिसके कारण ऐसी नौबत आ गई है एक आदमी की कमाई से काम नहीं चलता है, इसलिए कमाई के लिए पति-पत्नी दोनों को नौकरी करनी पड़ती है। **रचना वर्मा मोहन एवं प्रभाकर (2020)** के अनुसार ऐसी स्थिति में वे बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते तथा बच्चे अपने को उपेक्षित महसूस करते है। वे बच्चे माँ-बाप के प्रेम से वंचित रहने के कारण हर वक्त क्रोध और आक्रोश में रहते हैं। उनमें विद्रोह की भावना पनपती रहती है। वे तनाव में घिरे रहते हैं। उनमें हर वक्त असुरक्षा की भावना बनी रहती है, तो ऐसे बदलते स्वरूप को देखकर हम बच्चें को कैसे

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मूल्यवान बना सकते हैं। कैसे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ा सकते है। यह कठिन ही नहीं नामुमकिन भी है, परन्तु इस असम्भव कार्य को सम्भव बनाने के लिए परिवार की सबसे बड़ी विशेषता है प्रेम, विश्वास और सहयोगपूर्ण वातावरण बनाए रखना। प्रेम, विश्वास और सहयोगपूर्ण वातावरण तीनों यदि एकत्रित हो जाते हैं तो बच्चे का विकास आसानी से होता रहता है तथा विकास के साथ-साथ बच्चे में मूल्य तथा शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाने के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं।

गृह परिवेश में शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

1. परिवार- हमारी सामाजिक संरचना में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई है। संयुक्त परिवार के विघटन तथा एकल परिवारों के प्रचलन के चलते प्रभावित वातावरण का प्रभाव किशोरों पर भी पड़ता है। एकल परिवार में कई बार बच्चे बहुत अकेलापन महसूस करते हैं और उनकी ऊर्जा को सही दिशा नहीं मिल पाती। इसका कारण बच्चे अंदर ही अंदर घुटते रहते हैं।

2. कामकाजी अभिभावक- माता-पिता दोनों के कामकाजी होने या अन्य किसी व्यस्तताओं के कारण वे किशोरों को पर्याप्त समय एवं ध्यान नहीं दे पाते । अपेक्षित स्नेह एवं मार्गदर्शन के अभाव में किशोर और माता-पिता में दूरियाँ बढ़ती हैं, उनमें असुरक्षा की भावना आती है तथा उसमें आत्मविश्वास की कमी होती है।

3. संवादहीनता- माता-पिता एवं संतान के बीच संवादहीनता के कारण किशोर अपने मन की बात या अपनी समस्या किसी अन्य (गैर जिम्मेदार व्यक्ति) से बाँटता (शेयर करता) है जिससे गलत मार्ग पर जाने की संभावना होती है। कभी-कभी यह (शेयर करने की) स्थिति भी नहीं होती है जिसके परिणाम स्वरूप किशोर में कुण्ठा एवं अवसाद का जन्म होता है।

4. किशोर की आवश्यकताओं की उपेक्षा- कुछ अभिभावक किशोरों की उचित अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं को भी ठीक से समझ नहीं पाते और न ही उसकी पूर्ति का प्रयास करते हैं। जिससे वे अपने आपकों दीन हीन समझने लगते हैं। अभिभावक या परिजन

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किशोरों की दिनचर्या पर ध्यान नहीं देते। अव्यवस्थित दिनचर्या उनके प्रदर्शन को प्रभावित करती है एवं वे अपना सौ प्रतिशत नहीं दे पाते और किसी न किसी क्षेत्र में कमजोर हो जाते हैं। फलतः किशोरों में निराशा की भावना उत्पन्न होती है।

5. अभिभावकीय आकांक्षा एवं दबाव- किशोरों की रुचि एवं क्षमता के अनुरूप करियर संबंधी परामर्श लिए बगैर कई बार परिजनों द्वारा अपनी आकांक्षा के अनुरूप पाठ्यक्रम/विषय का चयन किया जाता है। इस पाठ्यक्रम/विषय में रूचि/रुझान के विपरीत अभिभावकों के दबाव के कारण बच्चे में अन्तर्निहित गुणों/विशेषताओं और प्रतिभा को प्रकट करने का अवसर नहीं मिल पाता जिसके कारण वे कुण्ठित होने लगते हैं। प्रारंभ से ही अभिभावकों द्वारा किशोरों को अच्छे अंक लाने हेतु टोकने/दबाव बनाने से छोटी उम्र में ही उनके मन में यह बात घर कर जाती है कि जीवन में यही (परीक्षाओं में अंक लाना ही) सब कुछ है।

6. पारिवारिक परिवेश- पारिवारिक परिवेश/माहौल का किशोरों की मानसिकता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। माता-पिता में सामन्जस्य का अभाव तथा भाई-बहन के बीच लगाव की शून्यता/ अप्रिय एवं कलहपूर्ण पारिवारिक वातावरण होने पर किशोर घर से बाहर या दूर रहने की प्रवृत्ति अपनाने लगते हैं एवं कभी-कभी गलत संगति में पड़ जाते हैं। यदि किशोर नकारात्मक सोच वाले रिश्तेदार, परिचित या मित्र की संगत में रहते हैं तों उनकी सोच भी नकारात्मक हो जाती है। पारिवारिक पृष्ठभूमि की प्रतिकूलता से भी किशोर बालकों की मनोस्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

7. किशोरों में फ़र्क करना- एक से अधिक बच्चे होने पर कई बार माता-पिता /परिजनों द्वारा परीक्षा में प्रदर्शन के आधार पर असमान व्यवहार करना। बेहतर प्रदर्शन वाले बच्चों को अधिक महत्व देना भी अपेक्षाकृत कमजोर बच्चे में हीन भावना तथा कुंठा का कारण होता है।

8. होम सिकनेस- किशोरों की इच्छा के विरुद्ध अध्ययन/कोचिंग हेतु घर से दूर जाने पर उनमें 'होम सिकनेस' विकसित होती है पर वे डर के कारण कह नहीं पाते और न ही वापस आ पाते हैं पारिणामतः अकेलापन एवं अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

9. किशोरों के लिए दण्डात्मक प्रतिक्रिया- किशोरों की गलती पर, सही/गलत की तार्किक आधार पर समझ विकसित करने के बजाय, दण्डात्मक प्रतिक्रिया उनमें कुण्ठा व विद्रोह का जनक होती है। साथ ही कई बार अभिभावक दूसरे परिवार के या अपने परिवार के, दूसरे किशोरों से या उसके मित्रों से, अपने किशोर की तुलना कर उसे उलाहना देते हैं या कोसते हैं जिससे उनमें निराशा व हीन भावना उत्पन्न होती है।

10. अभिभावकीय महत्वाकांक्षा- अभिभावक जो स्वयं नहीं कर पाए अथवा प्राप्त नहीं कर सके अपने उन सपनों/महत्वाकांक्षाओं को किशोरों की क्षमता/अभिरुचि/उपयुक्तता का आकलन किए बिना किशोर के माध्यम से साकार करना चाहते हैं। इस थोपी गई इच्छा को पूरी करने के प्रयास में किशोर तनाव में आ जाते हैं और कुण्ठाग्रस्त हो जाते हैं।

11. गतिविधियों में सामंजस्य का न होना- आज के इस प्रतिस्पर्धी युग में किशोर पर माता-पिता का, स्कूल का, कोचिंग का चैतरफा दबाव रहता है। समयाभाव/पढ़ाई का दबाव/स्वास्थ्यगत कारणों से किशोर उनमें सामन्जस्य नहीं बिठा पाता और हताशा से ग्रसित हो जाता है।

12. माँगों की पूर्ति- माता-पिता (विशेष रूप से समृद्ध) छोटी उम्र से ही किशोरों की हर माँग गुण-दोष पर विचार किए बिना पूरी कर देते हैं, फलस्वरूप किशोरों में 'न' सुनने की आदत ही नहीं होती। अतः व्यावहारिक धरातल पर मन के अनुसार जरा सा भी न होने पर उनमें हीन भावना उत्पन्न होती है।

13. व्यसन की आदत- व्यसन की आदत अभिभावक के पारिवारिक वातावरण को अस्वस्थ करती है तथा किशोरों पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है और किशोर क्रमश: बुरी आदतों से ग्रसित होते जाते हैं।

निष्कर्ष

आज का किशोर वर्तमान राष्ट्र व भविष्य को प्रतिविम्बित करने वाला दर्पण है। किशोर राष्ट्र की निधि व कल के राष्ट्र निर्माता है। अत: देश की बागडोर उनके कुशल

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मजबूत हाथों में होगी। देश की बागडोर अपने हाथों में लेने के अधिकारी ये किशोर अपने बाकी जीवन की तैयारी अनजाने ही कर रहे हैं। जहां एक इन किशोरों के अभिभावक, शिक्षक और समाज इन्हें स्वस्थ्य विकास एवं प्रगति की दिशा में देखकर हर्षोत्फुल हो जाते हैं वहीं कभी कभी इन किशोरों में कुछ अवांछनीय परिवर्तन देखकर वह सहम भी जाते हैं। किशोरों के निर्माण एवं समाज के उत्थान में शिक्षा का अत्यधिक योगदान होता है। मनुष्य का बौद्धिक विकास करने, व्यक्तित्व का विकास करने और समाज की दिशा निर्धारण करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है। शिक्षा में भावनाऐं, संवेदनायें, उभारने की प्रवृत्ति को ढालने और चिन्तन को मोड़ने एवं अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता होती है।

मानव व्यवहार को प्रकट करने वाले प्रमुख घटकों में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः शिक्षा के द्वारा ही किशोर के जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों, बाधाओं, समस्याओं का सफलतापूर्वक समाधान किया जा सकता है। किशोरावस्था में बालकों में होने वाले विभिन्न शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक परिवर्तन के कारण वह अपने माता-पिता, अध्यापिका, सहयोगियों से समायोजन न कर पाने के कारण वह अपने आपको किसी कार्य के योग्य न समझकर कुण्ठा को अपने मन में घर बना लेने देती है।

अतः आवश्यक है कि किशोरों को प्रारम्भ से उचित सामाजिक वातावरण एवं शिक्षा प्रदान की जाए जिससे वह समायोजन की समस्या से छुटकारा पाकर शैक्षिक समायोजन स्थापित कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गुप्त, रामबाबू (2000). शिक्षा मनोविज्ञान, नवीनतम संस्करण, प्रकाशक डॉ. अंशुमान सिंह, अष्टम् संस्करण।

गुप्ता और रानी (2015). गृह-वातावरण का बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस रिसर्च एंड डेवलपमेंट, वॉल्यूम 3, इशू 2, पृष्ठ सं. 428-429.

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भटनागर, सुरेश (1971). आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, द्वितीय संस्करण, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो ।

भाई, योगेन्द्र जीत (1984). शिक्षा मनोविज्ञान, नवीनतम संस्करण, आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।

रचना वर्मा मोहन और प्रभाकर (2020). किशोरों का सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन: समस्यायें एवं समाधान, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च, वॉल्यूम 5, इशू 3, पृष्ठ सं. 39-43.

शर्मा, सतीश (1982). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में प्रारम्भिक सांख्यिकीय, मेरठ: मीनाश्री प्रकाशन।

श्रीवास्तव, डी.ए. (2010). बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास, आगरा: श्री विनोद पुस्तक मन्दिर।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies